

भारत सरकार  
संस्कृति मंत्रालय  
लोक सभा  
अतारांकित प्रश्न संख्या: 1800  
उत्तर देने की तारीख: सोमवार, 10 मार्च, 2025  
19 फाल्गुन, 1946 (शक)

### प्राचीन भारतीय ज्ञान के केंद्रों का पुनरुद्धार

1800. श्री राव राजेन्द्र सिंह:

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार के पास उन प्राचीन ज्ञान के केंद्रों के बारे में जानकारी है जो विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा विनाश के विभिन्न प्रयासों के बावजूद बच गए हैं;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या सरकार ने ऐसे प्राचीन ज्ञान के केंद्रों के पुनर्निर्माण / पुनर्स्थापन तथा देश में प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करने के लिए कोई कदम उठाए हैं;
- (घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ङ) क्या सरकार द्वारा देश में प्राचीन ज्ञान प्रणालियों पर अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के लिए कोई कदम उठाए जा रहे हैं; और
- (च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर  
संस्कृति और पर्यटन मंत्री  
(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) और (ख): नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे और अन्य ज्ञान के प्राचीन केंद्रों को विदेशी आक्रांताओं के कई विनाशकारी प्रयासों का सामना करना पड़ा। तथापि, इन आक्रमणों के बावजूद ज्ञान विभिन्न माध्यमों से जीवित रहा:

#### 1. मौखिक परंपरा और गुरु-शिष्य परंपरा

कई प्राचीन शैक्षणिक संस्थान ज्ञान के मौखिक संचार पर पूर्णतः निर्भर करते थे। इन ज्ञान केंद्रों के नष्ट होने के बावजूद भी, विद्वानों ने ज्ञान को संरक्षित किया और इसे गुरु-शिष्य संबंधों के माध्यम से आगे बढ़ाया।

## 2. विद्वानों का प्रवास

जब नालंदा और विक्रमशिला जैसे शिक्षण संस्थानों पर आक्रमण हुआ, तो यहां के विद्वान अपने ज्ञान के साथ विभिन्न क्षेत्रों में चले गए। इसमें से कई दक्षिण भारत, तिब्बत, चीन और दक्षिण पूर्व एशिया में प्रवासित हुए और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनकी शिक्षाएं संरक्षित और प्रसारित हो सकें।

## 3. धार्मिक संस्थाएं और बौद्ध मठ

मंदिर सहित बौद्ध एवं हिन्दू मठ ने द्वितीयक ज्ञान केंद्रों के रूप में कार्य किया। भिक्षुओं और विद्वानों ने अपने काम को गुप्त या अन्य सुरक्षित स्थानों पर जारी रखा। उदाहरण के लिए, तिब्बती बौद्ध मठों ने भारत में बौद्ध धर्म के पतन के समय भारतीय ग्रंथों और परंपराओं को संरक्षित किया।

## 4. विदेशी अनुवाद और अभिलेख

जब आक्रमणकारी पुस्तकालयों को नष्ट कर रहे थे उस समय शुआनज़ांग और अल-बिरूनी जैसे विदेशी यात्रियों ने भारत की प्राचीन ज्ञान का बहुत हद तक दस्तावेजीकरण किया। कई भारतीय ग्रंथों का चीनी, अरबी और फारसी में अनुवाद किया गया जिससे भारत के बाहर इस ज्ञान को संरक्षित करने में सहायता मिली।

## 5. भोज पत्र पांडुलिपियाँ और भूमिगत पुस्तकालय

कुछ विद्वानों ने इन पांडुलिपियों को दूरस्थ स्थानों या भूमिगत भंडारों में छिपा दिया था। आज भी, ये प्राचीन ग्रंथ मंदिरों और निजी संग्रहों में प्राप्त होते हैं।

## 6. ज्ञान का पुनरुत्थान

इन विनाश के बाद भी, भारत ने ज्ञान के कई पुनरुत्थान केंद्र मिले। वाराणसी और कांचीपुरम जैसे ज्ञान के नए केंद्र बने, जो आज तक बौद्धिक परंपराओं को जारी रखते हैं।

## 7. अन्य संस्कृतियों में एकीकरण

भारतीय गणितीय, वैज्ञानिक और दार्शनिक ज्ञान को इस्लामी और यूरोपीय विद्वानों द्वारा आत्मसात किया गया। दशमलव प्रणाली और आयुर्वेद जैसे सिद्धांत वैश्विक सभ्यताओं में शामिल हो गए जिससे संस्थागत विनाश के बावजूद उनके अस्तित्व की रक्षा सुनिश्चित हुई।

इस प्रकार, जब इन प्राचीन ज्ञान केंद्रों पर प्रत्यक्ष रूप से आक्रमण किया गया तब भी उनकी बौद्धिक और सांस्कृतिक विरासत लचीलापन, अनुकूलन और ज्ञान के व्यापक प्रसार के माध्यम से जीवित रही।

(ग) और (घ): इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) ने भारत के प्राचीन ज्ञान प्रणालियों और इन ज्ञान केंद्रों को पुनर्जीवित और पुनर्स्थापित करने के लिए कई पहलों को अपनाया है:-

## 1. वैदिक धरोहर पोर्टल

इस पोर्टल को 27 मार्च, 2023 को शुरू किया गया था। यह आईजीएनसीए की एक महत्वपूर्ण परियोजना है जिसका उद्देश्य वेदों की समृद्ध धरोहर को संरक्षित और प्रसारित करना है। यह पोर्टल में 550 घंटे से अधिक समय की ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखा जा सकता है जिसमें 18,000 से अधिक वैदिक मंत्र शामिल हैं। इसमें वेद, उपनिषद, वेदांग, उपवेद और वैदिक अनुष्ठानों के विवरण जैसे प्राचीन ग्रंथों की लिप्यांतरण भी शामिल हैं, जो ऑडियो-वीडियो दोनों प्रारूपों में उपलब्ध हैं। यह पहल सुनिश्चित करती है कि पारंपरिक वैदिक ज्ञान विद्वानों, वृत्तिकों और आम जनता के लिए सुलभ हो, जिससे इसके संरक्षण और प्रचार में मदद मिलती है।

## 2. भारतीय ज्ञान पद्धति (आईकेएस) पहल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप आईजीएनसीए शिक्षा मंत्रालय के तहत भारतीय ज्ञान पद्धति (आईकेएस) पहल का समर्थन करता है। अक्टूबर, 2020 में स्थापित, आईकेएस प्रभाग पारंपरिक भारतीय ज्ञान को समकालीन शिक्षा में एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें वैदिक गणित, आयुर्वेद, योग और प्राचीन भारतीय विज्ञान जैसे विषयों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करना है। आईआईटी जैसे संस्थानों के साथ सहयोग ने भारतीय संगीत और अन्य स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के चिकित्सीय मूल्यों का पता लगाने वाले पाठ्यक्रमों और अनुसंधान कार्यक्रमों की शुरुआत की है।

## 3. परियोजना 'मौसम'

आईजीएनसीए की परियोजना 'मौसम' एक बहु-विषयक पहल है जो हिन्द महासागर के तटीय देशों के बीच प्राचीन, ऐतिहासिक, सामुद्रिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को पुनर्जीवित और मजबूत करने का प्रयास करती है। इस परियोजना का उद्देश्य इन मार्गों के साथ प्रसारित होने वाली साझा ज्ञान प्रणालियों और विचारों को प्रलेखित करना और मनाना है, ताकि लंबे समय से समाप्त हुए संबंधों को फिर से जीवित किया जा सके और सहयोग के आदान-प्रदान के नए रास्तों को बढ़ावा दिया जा सके।

## 4. अकादमिक कार्यक्रम और अनुसंधान

आईजीएनसीए विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान कराता है, जिसमें भारत की कला, संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से संबंधित स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी शामिल हैं। अनुसंधान, प्रकाशनों और प्रशिक्षण के माध्यम से, यह केंद्र प्राचीन प्रथाओं और दार्शनिकताओं को समझने और पुनर्जीवित करने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण पर जोर देता है।

इन पहलों के माध्यम से, आईजीएनसीए भारत के प्राचीन ज्ञान केंद्रों और प्रणालियों को पुनर्निर्मित, पुनर्विकसित और पुनर्स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ताकि समकालीन समय में प्रासंगिकता और निरंतरता सुनिश्चित की जा सके।

(ड) और (च): इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) ने भारत में प्राचीन ज्ञान प्रणालियों पर शोध को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों को अपनाया है:-

### 1. प्रभागीय अनुसंधान पहलें

आईजीएनसीए की संगठनात्मक संरचना में विशेषीकृत प्रभाग शामिल हैं जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

**कलानिधि:** मानविकी और कला में अनुसंधान और संदर्भ सामग्री के एक भंडार के रूप में कार्य करता है और शैक्षणिक शोध में सहायता करने के लिए पाठ्य, दृश्य और श्रव्य आंकड़ा का एक विशाल संग्रह एकत्रित करता है।

**कलाकोष:** यह अनुसंधान और प्रकाशन का कार्य करता है जो विभिन्न विषयों में बौद्धिक परंपराओं की जांच करता है और इस प्रकार प्राचीन ज्ञान प्रणालियों की समझ को समृद्ध करता है।

**जनपद संपदा:** जीवन शैली अध्ययन के लिए समर्पित यह प्रभाग जनजातीय और लोक कलाओं पर व्यवस्थित शोध करता है और जीवंत प्रस्तुतियों को सुविधाजनक बनाता है तथा स्वदेशी ज्ञान की गहरी समझ को बढ़ावा देता है।

**कलादर्शन:** यह शोध निष्कर्षों को प्रदर्शनों के माध्यम से दृश्य रूपों में बदलता है और प्राचीन ज्ञान को जनता के लिए सुलभ बनाता है एवं आगे की शैक्षणिक जांच को बढ़ावा देता है।

**सांस्कृतिक सूचना प्रयोगशाला:** यह सांस्कृतिक संरक्षण और प्रचार के लिए प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग करता है, जिसमें 'कलासंपदा' का विकास शामिल है, जो दुर्लभ अभिलेखीय संग्रहों को समाहित करने वाला एक डिजिटल भंडार है।

## **2. क्षेत्रीय केंद्र**

आईजीएनसीए ने शोध को विकेंद्रीकृत करने और क्षेत्रीय सांस्कृतिक अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए संपूर्ण भारत भर में क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए हैं, जिनमें वाराणसी, गुवाहाटी, बेंगलुरु, रांची, पुडुचेरी, त्रिशूर, गोवा, वडोदरा और श्रीनगर शामिल हैं। ये केंद्र स्थानीय कला रूपों, परंपराओं और ज्ञान प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और क्षेत्र-विशिष्ट शोध एवं संरक्षण प्रयासों को सुविधाजनक बनाते हैं।

## **3. सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाएँ**

आईजीएनसीए विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर अंतरविषयक अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित करता है।

## **4. प्रकाशन और प्रसार**

यह केंद्र प्राचीन ज्ञान प्रणालियों से संबंधित शोध निष्कर्ष, शब्दकोश, शब्दावलियाँ और विश्वकोश प्रकाशित करता है। ये प्रकाशन विश्व भर के विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य करते हैं, जो भारत की समृद्ध बौद्धिक परंपराओं पर वैश्विक संवाद में योगदान देते हैं।

आईजीएनसीए इन व्यापक पहलों के माध्यम से, प्राचीन ज्ञान प्रणालियों पर अनुसंधान को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ताकि उनकी सुरक्षा और निरंतरता सुनिश्चित हो सके।

\*\*\*\*\*